

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 5, जोनाथन एडवर्ड्स और प्रथम महान जागृति

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपने शिक्षण में हैं। यह जोनाथन एडवर्ड्स और प्रथम महान जागृति पर सत्र 5 है।

पृष्ठ 13 तक की रूपरेखा। इससे आपको यह समझ में आ जाएगा कि हम यहाँ क्या कर रहे हैं। हम औपनिवेशिक अमेरिका में धार्मिक तस्वीर देने की कोशिश कर रहे हैं। और फिर हम बस उलट कर खत्म करने जा रहे हैं क्योंकि यहाँ हम इसे स्थानों के हिसाब से कर रहे हैं।

तो, हम इसे उलट कर औपनिवेशिक अमेरिका में चर्चों के वितरण को देखेंगे। तो, उन दोनों के बीच, फिर, हमें एक तरह की समझ मिल गई है, मुझे लगता है, मुझे उम्मीद है, यहाँ क्या हो रहा है, संप्रदाय के हिसाब से, हमने जो अध्ययन किया है उसके संदर्भ में। और फिर हम शुरू करेंगे। हम आज व्याख्यान संख्या चार, प्रथम महान जागृति शुरू कर पाएंगे।

तो, ठीक है, औपनिवेशिक अमेरिका में धार्मिक तस्वीर। तो हम, हम, जो हमने जाने से पहले कहा था, मुझे लगता है, वह यह था कि, याद रखें, हमने कहा था कि दूसरी, तीसरी, चौथी पीढ़ी के कई चर्च, चर्च मूल रूप से अप्रवासी चर्च थे, दूसरी, तीसरी, चौथी पीढ़ी के कई चर्च पतन की ओर बढ़ने लगे थे और संकट में पड़ने लगे थे। जब वे आए थे, तब वे जो थे, उसकी जीवंतता को उन्होंने बरकरार नहीं रखा।

सवाल यह है कि हम इस बात पर नहीं पहुँच पाए कि इसके क्या कारण हैं? हमने इसकी शुरुआत नहीं की, है न? क्या कारण हैं? इस गिरावट के मूल कारण क्या हैं? ठीक है, नंबर एक, पहला कारण यह है कि क्या हमने इसकी शुरुआत की? क्या यह आपको परिचित लगता है? हाँ, नहीं, हमने इसकी शुरुआत नहीं की, है न? पहला कारण उनके अपने सदस्यों के उत्साह में गिरावट है। तो, यही पहला कारण है कि इन अप्रवासी चर्चों ने अपनी ताकत बरकरार नहीं रखी। वे यहाँ आए, एक या दो पीढ़ियाँ, और उनका पतन शुरू हो गया।

पहला कारण यह है कि उनकी अपनी सदस्यता का जोश खत्म होने लगा है। उनके अपने सदस्यों में वह जोश या जीवंतता नहीं रही जो मूल अप्रवासियों में थी। अब, हम पहले ही प्यूरिटन्स के मामले में यह देख चुके हैं।

याद रखें कि हमने प्यूरिटन्स के साथ क्या कहा था: पहले कौन आया? क्या उनकी संपत्ति में वृद्धि हुई? क्या इस तरह से उनका इंजीलवाद का उत्साह कम हो गया? या फिर उनका इंजीलवाद का उत्साह कम हो गया और इस वजह से उनमें वृद्धि हुई, मुझे नहीं पता, पहले क्या आया, मुर्गी या अंडा? तो यह पहली बात है जो समस्याग्रस्त हो जाती है। ठीक है, दूसरी बात जो इन अप्रवासी चर्चों के लिए समस्याग्रस्त हो जाती है, वह है उनके बीच असंतुष्टों की संख्या। दूसरे शब्दों में, जो

लोग संप्रदाय में बने रहे, लेकिन उनके संप्रदाय और उनके विशेष चर्च के साथ गंभीर मतभेद होने लगे।

असहमति धार्मिक असहमति, चर्च की राजनीति या आप चर्च की स्थापना कैसे करते हैं, आप चर्च को कैसे स्थापित करते हैं, और आप चर्च को कैसे संचालित करते हैं, इस पर असहमति हो सकती है। लेकिन दूसरी बात, बहुत सारे असंतुष्ट हैं। बहुत सारे तर्क हैं।

चर्च में बहुत से लोग हैं जो चर्च से नाखुश हैं, जिसकी वजह से चर्च का पतन हो रहा है। तो यह दूसरा कारण है। ठीक है, कारण संख्या तीन 17वीं सदी, 18वीं सदी के तर्क के युग, तर्कसंगतता के युग, जो भी आप इसे कहना चाहें, का प्रभाव है।

चर्चों पर तर्क या तर्कसंगतता के युग का प्रभाव। और इसका एक अच्छा उदाहरण, बेशक, देववाद है। अब, हम एक और व्याख्यान में देववाद के बारे में बहुत कुछ बात करेंगे, लेकिन इसका एक अच्छा उदाहरण 17वीं शताब्दी और 18वीं शताब्दी का देववाद है।

मैं बस यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ: हमने शायद यह कहा है, लेकिन अगर हमने नहीं कहा है, तो देववाद कोई धर्म नहीं है। यह कोई संप्रदाय नहीं है। देववाद एक दार्शनिक दृष्टिकोण है, एक तरह का धार्मिक दृष्टिकोण है।

यह अंततः एक संप्रदाय के रूप में विकसित होगा, लेकिन इन अप्रवासी चर्चों के लिए एक तरह के तर्कवादी विरोध के रूप में देववाद बहुत मजबूत हो रहा है और 18वीं शताब्दी में अमेरिका में जोर पकड़ रहा है। अब याद रखें, देववाद का मतलब है कि भगवान यहाँ ऊपर हैं, हम यहाँ नीचे हैं, और भगवान और हमारे बीच कोई संबंध नहीं है। यह कुछ ऐसा है जैसे आपने घड़ी बनाने वाले भगवान के बारे में सुना हो।

भगवान ने दुनिया को ऐसे बनाया जैसे घड़ी बनाने वाला घड़ी बनाता है, और उसने इसे घुमाया, और यह यहाँ नीचे टिक-टिक कर रहा है, लेकिन भगवान और हमारे बीच कोई संबंध नहीं है। तो धर्म के प्रति इस तरह का बहुत ही तर्कवादी दृष्टिकोण, भगवान के प्रति तर्कवादी दृष्टिकोण, जिसका बहुत सारे संप्रदायों, बहुत सारे चर्चों और यहाँ उपनिवेशों में बहुत सारे लोगों पर वास्तविक प्रभाव पड़ने वाला है। तो यह हमारी सूची में नंबर तीन है, है न? और हमारी सूची में नंबर चार यह है कि अब लोग हैं, उपनिवेशों में चर्च के बाहर बहुत सारे लोग हैं क्योंकि रोड आइलैंड और पेंसिल्वेनिया जैसी जगहों ने धार्मिक स्वतंत्रता पर जोर दिया है, न कि केवल धार्मिक सहिष्णुता, न केवल अन्य लोगों के प्रति सहिष्णु होना, बल्कि पूरी तरह से लोग स्वतंत्र हैं।

और उस धार्मिक स्वतंत्रता का मतलब था कि बहुत से लोगों ने नास्तिक या अज्ञेयवादी बनना चुना। वे चर्च का हिस्सा नहीं बनना चाहते थे, चर्च जीवन का बिल्कुल भी हिस्सा नहीं बनना चाहते थे। अब, उनमें से कुछ लोग, सभी नहीं, जाहिर तौर पर छोटे समूह, लेकिन उनमें से कुछ लोग चर्च और संगठित धर्म के प्रति काफी विरोधी होने लगे।

तो, आपको बाहरी विरोध मिलता है, न सिर्फ चर्च के प्रति उदासीनता, न सिर्फ धर्म के प्रति उदासीनता, न सिर्फ ईसाई धर्म के सिद्धांतों के प्रति उदासीनता। आपको चर्च, धर्म, ईसाई धर्म,

सिद्धांतों और इसी तरह की अन्य चीजों के प्रति विरोध महसूस होने लगता है। और हमने वास्तव में पहले ऐसा अनुभव नहीं किया है।

हमने यूरोप में ईसाई धर्म की एक शाखा से दूसरी शाखा के बीच विरोध का अनुभव किया है। इसलिए, हमारे यहां प्रोटेस्टेंटिज्म और रोमन कैथोलिकिज्म आदि का टकराव हुआ है, लेकिन हमने चर्च के बाहर के लोगों के विरोध का अनुभव नहीं किया है जो अब वास्तव में चर्च पर सवाल उठा रहे हैं, ईसाई धर्म पर सवाल उठा रहे हैं। यह एक तरह से नया है।

तो यह समस्याजनक होने जा रहा है। इसलिए, हम 18वीं सदी में औपनिवेशिक काल में प्रवेश कर रहे हैं, और कई चर्चों को परेशानी होने लगी है। वे उस जीवन को बनाए रखने में सक्षम नहीं हैं जो उनके पास तब था जब वे पहली बार आए थे।

अब सवाल यह है कि इससे क्या होने वाला है, लेकिन हम अभी इस बारे में चिंता नहीं करेंगे। मैं सिर्फ दूसरा काम करूंगा, अमेरिका में चर्चों का वितरण। अब, यह इसे उलट रहा है।

ऐसा लग रहा है कि यह कॉलोनी दर कॉलोनी नहीं है, लेकिन वहां क्या हो रहा है? यह इसे उलट रहा है और केवल विभिन्न संप्रदायों का उल्लेख कर रहा है और आप उन्हें कहां पा सकते हैं। इसलिए, मुझे उम्मीद है कि एक और दो के बीच, आपको औपनिवेशिक काल के दौरान अमेरिकी चर्च की थोड़ी सी तस्वीर मिल जाएगी।

ठीक है, तो चर्चों का वितरण। मैं रूपरेखा के पृष्ठ 13 पर हूँ। ठीक है, सबसे पहले, मण्डली चर्च।

मण्डली चर्च, मण्डलीवाद। औपनिवेशिक काल में आप इसे कहाँ पाते हैं? आप इसे लगभग विशेष रूप से न्यू इंग्लैंड में पाते हैं। न्यू इंग्लैंड के बाहर आपको मण्डलीवाद या मण्डली चर्च बहुत कम मिलते हैं।

यह एक तरह से न्यू इंग्लैंड का उत्पाद है। दूसरे नंबर पर एंग्लिकन चर्च है, जिसे अंततः एपिस्कोपल चर्च कहा जाएगा। लेकिन अभी, एंग्लिकन चर्च, आप एंग्लिकन चर्च कहां पाते हैं? वास्तव में, आप एंग्लिकन चर्च को पूरे उपनिवेशों में फैला हुआ पाते हैं।

वर्जीनिया जैसे कुछ स्थानों पर वे काफी प्रभावशाली हैं, लेकिन आपको जॉर्जिया में भी एंग्लिकन चर्च मिल जाएगा। और यह जॉर्जिया का वह एंग्लिकन चर्च है जहाँ जॉन वेस्ले गए थे। जॉन और चार्ल्स वेस्ले शायद बाद में इसके बारे में बात करेंगे।

तो, एंग्लिकनवाद एक तरह से फैला हुआ है। प्रेस्बिटेरियनवाद। औपनिवेशिक काल के दौरान प्रेस्बिटेरियनवाद छोटा था।

आप में से कुछ लोग प्रेस्बिटेरियन पृष्ठभूमि से हो सकते हैं, लेकिन प्रेस्बिटेरियनवाद छोटा है। लेकिन यह पूरे उपनिवेशों में काफी फैला हुआ है। ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ आप कह सकें कि, यह प्रेस्बिटेरियनवाद का दिल और आत्मा है, औपनिवेशिक काल के दौरान नहीं।

चौथा, बैपटिस्ट। खैर, बैपटिस्ट हर जगह हैं। इसलिए, वे पूरी कॉलोनी में फैले हुए हैं।

बेशक, आपको रोड आइलैंड जैसी जगहों पर बैपटिस्ट की ताकत देखने को मिलती है, लेकिन वे पूरे कॉलोनी में फैले हुए हैं। हम पूरे कोर्स में जारी रखने जा रहे हैं। हम इनमें से कुछ संप्रदायों के साथ जारी रखेंगे और देखेंगे कि वे यहाँ से कहाँ तक जाते हैं।

रोमन कैथोलिक चर्च। रोमन कैथोलिक चर्च काफी छोटा है, और यह मध्य उपनिवेशों में केंद्रित है। इसलिए रोमन कैथोलिक चर्च का दिल न्यू जर्सी, पेंसिल्वेनिया, डेलावेयर, मैरीलैंड और मध्य उपनिवेशों जैसी जगहों पर है।

आप कहेंगे, जब हम रोमन कैथोलिक चर्च के मध्य उपनिवेशों के बारे में ऐसा कहते हैं, तो आप कहेंगे, अरे, एक मिनट रुको। मैं बोस्टन में रहता हूँ। बोस्टन में रोमन कैथोलिकों की संख्या बहुत ज्यादा है।

तो आप यह क्यों कह रहे हैं कि वे सिर्फ मध्य उपनिवेशों में हैं? खैर, बोस्टन में आने वाला कैथोलिक आप्रवास अगली सदी तक नहीं आता। तो यह उस अवधि से बहुत लंबा समय है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। अभी, रोमन कैथोलिक चर्च, छोटे, मध्य उपनिवेश, वहीं केंद्रित हैं।

आप जानते हैं, केकर्स को मित्र कहलाना पसंद था, और वे पूरे उपनिवेशों में फैले हुए थे, लेकिन वे न्यू इंग्लैंड और मध्य उपनिवेशों में भारी थे। और इसका आंशिक कारण यह है कि, बेशक, उन्हें रोड आइलैंड में इतनी बड़ी संख्या में स्वागत किया गया था और पेंसिल्वेनिया में भी इतनी बड़ी संख्या में उनका स्वागत किया गया था। तो, यह मध्य उपनिवेश है, लेकिन न्यू इंग्लैंड भी है।

केकर्स को अपना घर मिल रहा है। फ्रेंड्स को भी अपना घर मिल रहा है। ठीक है, लूथरन चर्च।

लूथरन मध्य उपनिवेशों में पाए जाते हैं। याद रखें, यह पेंसिल्वेनिया ही था जिसने जर्मन लूथरन और डंकर जैसे अन्य छोटे समूहों का इतना स्वागत किया था। खैर, मध्य उपनिवेश, लेकिन जॉर्जिया में भी लूथरन हैं, साथ ही जॉर्जिया में एंग्लिकन थे, इसलिए जॉर्जिया में भी लूथरन हैं।

लेकिन मूल रूप से, मध्य उपनिवेश वे स्थान हैं जहाँ आपको लूथरन चर्च मिलते हैं। अंत में, हमने डच रिफॉर्म चर्च का उल्लेख किया। डच रिफॉर्म चर्च मध्य उपनिवेशों में है।

बेशक, यह न्यूयॉर्क में बहुत भारी है। भले ही न्यूयॉर्क ब्रिटिश बन गया, यह पहला नया नीदरलैंड था, और डच रिफॉर्म चर्च भी। इसलिए, न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी में, हम पहली महान जागृति देखेंगे।

प्रथम महान जागृति की शुरुआत न्यू जर्सी और न्यूयॉर्क में डच सुधारवादियों के बीच हुई थी। तो, डच सुधारवादी, मूल रूप से यहीं केंद्रित हैं। ठीक है, तो यह व्याख्यान 3 है। क्या व्याख्यान 3 के बारे में कोई प्रश्न हैं, इसके साथ क्या हो रहा है, हम इसे क्या कह रहे हैं, और हम इस व्याख्यान का क्या शीर्षक रखते हैं? संप्रदायवाद।

अमेरिकी उपनिवेशों में संप्रदायवाद। तो क्रांति के समय तक, ठीक है, प्रथम महान जागृति के समय तक, अमेरिकी उपनिवेशों में अब हमारे पास काफी संख्या में संप्रदाय हैं। वे सभी अप्रवासी चर्च हैं।

वे सभी पुराने देश से आए थे, लेकिन वे किसी तरह से बसने लगे हैं। लेकिन फिर भी, उनमें से कुछ को अपने अस्तित्व के साथ परेशानी हो रही है क्योंकि इसके चार कारण हैं जिनका हमने उल्लेख किया है। लेकिन क्या इसके बारे में कोई सवाल है? ठीक है, हम व्याख्यान 4, जोनाथन एडवर्ड्स और प्रथम महान जागृति की यात्रा पर जा रहे हैं।

व्याख्यान 4, जोनाथन एडवर्ड्स और प्रथम महान जागृति। ठीक है, यदि आप रूपरेखा का अनुसरण कर रहे हैं, तो आप देख सकते हैं कि हम क्या करने जा रहे हैं। हम जोनाथन एडवर्ड्स, जोनाथन एडवर्ड्स के जीवन और मंत्रालय के बारे में बात करने में काफी लंबा समय लेने जा रहे हैं।

और फिर, हम अन्य महत्वपूर्ण नेताओं पर नज़र डालेंगे। हम प्रथम महान जागृति के प्रति प्रतिक्रियाओं और प्रथम महान जागृति के परिणामों पर नज़र डालेंगे। हमेशा की तरह, यह हमें हमारे व्याख्यानों में शायद एक या दो दिन आगे ले जाएगा, और यह एक अच्छी बात है।

हम इस बात से खुश हैं। इसलिए, अगर हमें पिछली सर्दियों जैसी सर्दी मिलती है और हमें एक दिन भी छुट्टी लेनी पड़ती है, तो हम जानते हैं कि हम अभी भी खेल में आगे हैं, इसलिए हम ठीक कर रहे हैं। ठीक है, जोनाथन एडवर्ड्स।

जोनाथन एडवर्ड्स के बारे में कहने को बहुत कुछ है। यह कोर्स में शामिल लोगों में से एक है। शायद, मुझे नहीं पता, शायद कोर्स में चार या पाँच लोग हों।

मैं उनके जीवनवृत्तांत के बारे में बात करने में काफी समय लगाता हूँ क्योंकि वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने अमेरिकी धार्मिक जीवन और अमेरिकी सांस्कृतिक जीवन को बहुत आकार दिया। इसलिए, मैं आपको पाँच या छह और जीवनवृत्तांत पढ़ने के लिए कह सकता हूँ, लेकिन मुझे लगा कि आप इसके लिए तैयार होंगे: पाँच या छह और जीवनवृत्तांत, पाँच या छह और पुस्तकें।

तो, मैं यहाँ मदद करने के लिए हूँ। तो, मैं जिस तरह से मदद करता हूँ, उनमें से एक है आपको जीवनी और जीवनी संबंधी मुख्य अंश देना। तो, हम जोनाथन एडवर्ड्स के साथ ऐसा करते हैं, जो एक उल्लेखनीय व्यक्ति हैं।

ठीक है, 1703, 1758, बहुत लंबा जीवन नहीं है, जैसा कि हम देखेंगे, जिन कारणों को हम बाद में देखेंगे। और मैं उन्हें अमेरिका में जन्मे सबसे महान धर्मशास्त्रियों और दार्शनिकों में से एक कह रहा हूँ, अमेरिका में जन्मे। अब, कुछ लोग जो यहाँ आए हैं, आप जानते हैं, कुछ अप्रवासी जो यहाँ आए हैं, चर्च के नेता और अन्य जिनका हमने उल्लेख किया है, वह ठीक है, लेकिन वे यहाँ अमेरिका में पैदा नहीं हुए थे, जबकि जोनाथन एडवर्ड्स यहाँ अमेरिका में पैदा हुए थे।

इसलिए, हम उन्हें इसका श्रेय देते हैं, और वे निश्चित रूप से महानतम लोगों में से एक हैं। ध्यान दें कि मैंने धर्मशास्त्रियों और दार्शनिकों का उल्लेख किया है। इसलिए, धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र और अन्य चीज़ों में भी उनके पास यह उल्लेखनीय क्षमता थी।

मुझे नहीं पता, और मुझे कार्ड देखने होंगे। क्या आप में से कोई हार्टफोर्ड, कनेक्टीकट से है? क्या आप में से कोई ईस्ट विंडसर, कनेक्टीकट में है? तो, जोनाथन एडवर्ड्स का जन्म ईस्ट विंडसर, कनेक्टीकट में हुआ था। तो, कनेक्टीकट के आप लोग उसे अपना जन्म स्थान मान सकते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।

बहुत ही कम उम्र में ही उन्हें पता चल गया कि जोनाथन के रूप में उनके पास एक बहुत ही होशियार बच्चा है। क्योंकि यहाँ कुछ अच्छे उदाहरण दिए गए हैं। वह लैटिन, ग्रीक और हिब्रू में धाराप्रवाह था और ऐसा लगता था कि 13 साल की उम्र तक उसने लैटिन, ग्रीक और हिब्रू में बहुत अच्छी महारत हासिल कर ली थी।

तो, आप जानते हैं, यह करना बहुत अच्छी बात है, है न? मेरा मतलब है, जब तक आप 13 या उससे ज़्यादा की उम्र के हो जाते हैं, तब तक आपको लैटिन, ग्रीक और हिब्रू भाषा सीखनी चाहिए? यह सही है। वह एक विशेष प्रतिभा के साथ पैदा हुआ था। इसलिए, वह एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति है।

तो यहाँ वह है। उनके बारे में एक और बात यह थी कि उन्हें प्राकृतिक विज्ञानों में बहुत रुचि थी। तो, अब याद रखें, हम 18वीं सदी की बात कर रहे हैं, इसलिए हम प्राकृतिक विज्ञानों के उस जबरदस्त ज्ञान की बात नहीं कर रहे हैं जो हमारे पास अभी है।

लेकिन उन्हें प्राकृतिक विज्ञानों में बहुत रुचि थी, और इसने उनके पास मौजूद अवलोकन की शक्ति को प्रदर्शित किया, जो उन्हें धर्मशास्त्रीय और दार्शनिक रूप से भी बहुत लाभ पहुंचाएगा। इसलिए, प्राकृतिक विज्ञान और प्राकृतिक दुनिया के अवलोकन आदि में उनकी रुचि, वह इसे धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र में भी अच्छी तरह से अनुवाद करने जा रहे हैं और धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र आदि में एक उत्सुक पर्यवेक्षक होंगे। इसलिए, निश्चित रूप से, उन्हें दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र में रुचि थी, और फिर उन्होंने येल में प्रवेश लिया जब वह अभी 13 वर्ष के भी नहीं थे।

तो, अब वह विश्वविद्यालय जाने के लिए तैयार है। तो आज, एक तरह से, हम कहेंगे कि उसे घर पर उसके माता-पिता ने प्रशिक्षित किया था और हमने जिन चीज़ों के बारे में बात की थी, जैसे भाषाएँ, दर्शन, धर्मशास्त्र, प्राकृतिक विज्ञान, इत्यादि। अब, वह येल जाता है।

जब वह येल में दाखिल हुआ तो उसकी उम्र 13 साल भी नहीं थी, इसलिए जब उसने येल की पढ़ाई पूरी की तो वह 17 साल का था। लेकिन मैं येल के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूँ। जब आप येल यूनिवर्सिटी के बारे में सोचते हैं, तो आपको येल और न्यू हेवन का ख्याल आता है।

हमने पहले भी इन महान विश्वविद्यालयों के बारे में बात की है। आप येल और न्यू हेवन और इस महान, विशाल विश्वविद्यालय के बारे में सोचिए। बाई ओर येल विश्वविद्यालय है, जैसा कि जोनाथन एडवर्ड्स जानते होंगे।

वहाँ एक चर्च था, और उसके दाईं ओर छात्रावास, व्याख्यान कक्ष, इत्यादि थे। यही वह चीज थी जो उसे येल के बारे में पता थी। अब, मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी है क्योंकि मैं वेथर्सफील्ड चर्च के बारे में जानता हूँ।

वहाँ, आप इसे दाईं ओर देख सकते हैं। वेथर्सफील्ड चर्च वह चर्च है जिसे आप यहाँ बाईं ओर देख रहे हैं क्योंकि येल विश्वविद्यालय वेथर्सफील्ड, कनेक्टीकट में शुरू हुआ था। यह न्यू हेवन में शुरू नहीं हुआ था।

यह अंततः न्यू हेवन में चला गया, लेकिन इसकी शुरुआत वेथर्सफील्ड, कनेक्टीकट में हुई। क्या कोई उस क्षेत्र से है? वेथर्सफील्ड, न्यू हेवन, शहर से? आप थे। यह एक अद्भुत चर्च है।

हम इस चर्च के बहुत से लोगों को जानते हैं क्योंकि इस चर्च के बहुत से लोग मेरे और करेन के साथ इज़राइल गए हैं। हमारे पास एक और इज़राइल यात्रा आने वाली है, और फिर हमारे साथ वेथर्सफील्ड चर्च के कुछ लोग भी इज़राइल जा रहे हैं। आपने शायद तब जोनाथन एडवर्ड्स रूम देखा होगा।

क्या आपने जोनाथन एडवर्ड्स के कमरे पर ध्यान दिया? तो, कनेक्टीकट के वेथर्सफील्ड में, जब जोनाथन एडवर्ड्स येल में छात्र थे, तो यह वह चर्च था जहाँ वे जाते थे क्योंकि यह चर्च एक तरह से कैम्पस में ही था। तो, यह वह चर्च था जहाँ वे जाते थे क्योंकि यह अभी न्यू हेवन में नहीं है। और चर्च में एक वेथर्सफील्ड कमरा है।

यह शायद इस कमरे के आकार का लगभग आधा है, और इसमें जोनाथन एडवर्ड्स की बहुत सारी सामग्री है। और वे किताबें जो उन्होंने पढ़ी थीं और इसी तरह की अन्य चीजें। तो, यह एक अद्भुत चर्च है, और मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि इसका पादरी गॉर्डन कॉलेज का एक स्नातक है।

तो, हम इस बात पर खुश हैं। तो, यह एक महान चर्च है, है न? हाँ, ठीक है। क्या यह एक महान चर्च नहीं है? ओह, ठीक है।

हाँ। अब मैं उसका नाम भूल गया हूँ, लेकिन उसका साला यहीं कैम्पस में रहता है। इसलिए, यहाँ सभी तरह के अद्भुत संबंध हैं।

तो, वेथर्सफील्ड चर्च। तो, वहाँ वह येल में जाता है। वास्तव में 13 वर्ष की आयु से पहले, उसने येल में एक छात्र के रूप में शुरुआत की।

विज्ञान के बारे में उनका दृष्टिकोण कहता है कि वे येल में इस पर काम कर रहे हैं। विज्ञान के बारे में उनका दृष्टिकोण यह है कि वे केवल तर्क में विश्वास के बारे में चिंतित हैं। प्रकृति के नियम ईश्वर से प्राप्त होते हैं और उनकी बुद्धि और प्रेम को प्रदर्शित करते हैं।

इसलिए, जब वह विज्ञान को देखता है, तो उसे बहुत चिंता होती है कि लोग केवल तर्क पर ही भरोसा करेंगे, और वे विज्ञान को केवल अपने तर्क और अपने दिमाग से ही समझेंगे। लेकिन वह लोगों को याद दिलाना चाहता है कि प्रकृति के नियम ईश्वर से प्राप्त हुए हैं। प्रकृति के नियम ईश्वर की बुद्धि और प्रेम को दर्शाते हैं।

और यह वास्तव में विज्ञान को देखने का उचित तरीका है। और, ज़ाहिर है, धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र और इसी तरह के अन्य विषयों को देखने का भी उचित तरीका होगा। इसलिए, वह येल में एक छात्र के रूप में इन सभी को एक साथ ला रहा है।

अब, हमें बस यह उल्लेख करना चाहिए कि जब वह येल में था और फिर जब वह येल से बाहर निकला, तो वह किसके लिए तर्क देता है? वह जॉन कैल्विन के धर्मशास्त्र और प्यूरिटन के धर्मशास्त्र के लिए तर्क देता है। वह कैल्विनवादी धर्मशास्त्र और प्रारंभिक प्यूरिटन धर्मशास्त्र का एक बड़ा रक्षक होगा क्योंकि उसका मानना है कि कैल्विनवादी धर्मशास्त्र बाइबल का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है। यह बाइबिल के शब्द की सबसे अच्छी व्याख्या है।

इसके बाद वे जैकब आर्मिनियस के बढ़ते धर्मशास्त्र और बढ़ते देववाद के खिलाफ तर्क देते हैं, जो एक तर्कवादी प्रकार का धर्मशास्त्र है, जिसके खिलाफ तर्क देते हैं। वे जैकब आर्मिनियस के धर्मशास्त्र के खिलाफ तर्क देते हैं क्योंकि आर्मिनियस स्वतंत्र इच्छा पर जोर देते हैं। और वे देववादियों के खिलाफ तर्क देते हैं क्योंकि वे यह नहीं मानते कि यीशु ईश्वर हैं।

इसलिए, वह एक बहुत ही सावधान विद्वान और बहुत ही सावधान छात्र है जिसका दिमाग और दिल बहुत साफ है। और इसलिए, यह वही होगा जिसके पक्ष में और विपक्ष में वह अपने धर्मशास्त्र और अपने उपदेशों आदि में तर्क देगा। अब, हमें बस यह उल्लेख करना चाहिए कि जैसा कि हम देखते हैं कि वह यहाँ धर्मशास्त्र में क्या रुचि रखते हैं, हमें बस इतना कहना चाहिए कि कैल्विन का धर्मशास्त्र और प्यूरिटन का धर्मशास्त्र अमेरिकी जीवन और संस्कृति में समाप्त हो गया है।

जब तक हम जोनाथन एडवर्ड्स तक पहुँचते हैं, तब तक यह अपने गौरवशाली दिनों को खो चुका है। और आर्मिनियन धर्मशास्त्र बहुत अधिक प्रचलित हो रहा है। स्वतंत्र इच्छा का यह धर्मशास्त्र बहुत अधिक प्रचलित हो रहा है।

तो, यह जोनाथन एडवर्ड्स ही हैं जिन्होंने कैल्विनिस्ट प्यूरिटन धर्मशास्त्र को अमेरिकी धर्मशास्त्रीय जीवन में वापस लाया और पहली महान जागृति के साथ अमेरिकी चर्च जीवन में वापस लाया। जोनाथन एडवर्ड्स के बारे में हमें एक और बात बतानी चाहिए कि वह अपने धर्म परिवर्तन के अनुभव के बारे में बात करते हैं। खैर, जोनाथन एडवर्ड्स द्वारा लिखी गई बहुत सी रचनाएँ हैं जिनसे आपको परिचित होना चाहिए।

हालाँकि, एक व्यक्तिगत कथा उनमें से एक है, क्योंकि एक व्यक्तिगत कथा में, वह अपनी तरह की धार्मिक तीर्थयात्रा के बारे में बात करता है। एक और चीज़ जिससे आपको जोनाथन एडवर्ड्स के बारे में परिचित होना चाहिए, वह है उनके उपदेश। उनके उपदेश बहुत उल्लेखनीय थे।

तो, जोनाथन एडवर्ड्स की व्यक्तिगत कहानी और उपदेश आपको जोनाथन एडवर्ड्स से अच्छी सामग्री पढ़ने को मिलेगी। लेकिन यहाँ बताया गया है कि वह अपने धर्म परिवर्तन के अनुभव का वर्णन कैसे करता है। अब, वह एक ईसाई घर में पला-बढ़ा था।

वह ईसाई धर्म और अन्य धर्मों को जानता था। लेकिन यह यहाँ है। 12 जनवरी, 1723 को, मैंने ईश्वर को अपना एक गंभीर समर्पण किया और इसे लिख दिया, भविष्य के लिए अपने आप को और जो कुछ भी मेरे पास था, उसे ईश्वर को सौंप दिया, किसी भी तरह से अपना नहीं, किसी भी तरह से खुद पर कोई अधिकार न रखने वाले व्यक्ति की तरह कार्य करने के लिए।

इसलिए, अपने स्वयं के धर्म परिवर्तन के अनुभव के संदर्भ में, वह इसे खुद को ईश्वर के प्रति समर्पित करने, खुद को पूरी तरह से ईश्वर के प्रति समर्पित करने और एक तरह से ईश्वर को खुद पर हावी होने देने के रूप में वर्णित करता है। अब, तो जाहिर है, उसे ऐसा नहीं लगा कि उसने ऐसा किया है, भले ही वह एक ईसाई घर में पला-बढ़ा हो। उसे ऐसा नहीं लगा कि उसने अपने जीवन में पहले ऐसा किया था।

और अब वह आता है और एक निजी कहानी में, हमें अपने जीवन के अपने आयाम के बारे में बताता है। ठीक है, जोनाथन एडवर्ड्स के बारे में एक और बात। जोनाथन एडवर्ड्स ने फैसला किया कि वह 1727 में जाएगा।

उसने फैसला किया कि वह नॉर्थम्प्टन, मैसाचुसेट्स में जाकर बस जाएगा। क्या कोई नॉर्थम्प्टन से है? सेंट्रल मैसाचुसेट्स? नॉर्थम्प्टन? ठीक है। वैसे, मैं कभी वहाँ नहीं गया, लेकिन मैं किसी दिन वहाँ जाना चाहता हूँ क्योंकि उसके दादा, जिनकी तस्वीर हमारे पास यहाँ है, सोलोमन स्टोर्ड, मैसाचुसेट्स में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, एक बहुत ही महत्वपूर्ण पादरी और उपदेशक थे, और वे 1643 से 1729 तक जीवित रहे।

वह जोनाथन एडवर्ड्स के दादा हैं, और नॉर्थम्प्टन, मैसाचुसेट्स में उनका एक चर्च है। तो, 1727 में जो हुआ, वह यह था कि जोनाथन एडवर्ड्स ने फैसला किया, ठीक है, इससे पहले, उन्होंने न्यूयॉर्क में एक त्वरित पादरी मंत्रालय किया था, लेकिन फिर 1727 में, उन्होंने फैसला किया कि वह नॉर्थम्प्टन कांग्रेसेशनल चर्च में अपने दादा की सहायता करने जा रहे हैं। इसलिए, उन्होंने 1727 में नॉर्थम्प्टन में कांग्रेसेशनल चर्च में अपने जीवन का यह बहुत महत्वपूर्ण कदम उठाया।

1727 में वहाँ गया था। आप उसके दादा की तारीख देख सकते हैं। दादा की मृत्यु 1729 में हुई थी।

तो, जोनाथन एडवर्ड्स ने 1729 में अपने दादा की मृत्यु के बाद चर्च के पादरी मंत्रालय को संभाला। ठीक है, तो अब यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है, वह तारीख, 1729, जब उन्होंने चर्च को संभाला। अब, वह क्या है? जोनाथन एडवर्ड्स एक अद्भुत पादरी और उपदेशक हैं।

उन्होंने सारा पियरपोंट से शादी की, जो एक खूबसूरत महिला थी, और उसी साल उनकी मृत्यु भी हो गई। उनके 11 बच्चे थे, जो 18वीं सदी में असामान्य नहीं था। जब मैं सुज़ाना वेस्ले की बात कर रहा हूँ, तो वह 17वीं सदी में थी, लेकिन सुज़ाना वेस्ले के 19 बच्चे थे।

उनमें से दो , आप जानते हैं, जॉन और चार्ल्स वेस्ली। यह बहुत सारे बच्चे हैं, है न? मुझे लगता है कि यह बहुत सारे बच्चे हैं। लेकिन सुज़ाना 25 बच्चों में से एक थी।

तो, सुज़ाना की माँ ने 25 बच्चों को जन्म दिया। यह बहुत सारे बच्चे हैं। लेकिन यहाँ 18वीं सदी में, उनके 11 बच्चे थे।

वह चर्च में अपना जीवन जी रहा है। वह प्रतिदिन लगभग 13 घंटे अध्ययन करता है, जो कि बहुत अच्छा नहीं है। क्या यह आपके लिए एक विद्यार्थी के रूप में एक बढ़िया उदाहरण नहीं है? प्रतिदिन 13 घंटे? यह बहुत बढ़िया होगा, है न? मैं जोनाथन एडवर्ड्स के साथ यह बात कहने की कोशिश करता हूँ कि अध्ययन में इतना समय बिताने के बाद, आप सोचेंगे कि इससे उसे कोई महान पुनरुत्थान लाने में मदद नहीं मिलेगी। लेकिन वास्तव में, यह उसके अध्ययन के कारण था, क्योंकि वह पवित्रशास्त्र को इतनी अच्छी तरह से जानता था, कि वह परमेश्वर द्वारा महान पुनरुत्थान लाने के लिए उपयोग किए जाने में सक्षम था।

इसलिए, जोनाथन एडवर्ड्स के लिए हर दिन पढ़ाई करना बहुत-बहुत ज़रूरी है। अब, उनके पास दास भी थे। जब आप जोनाथन एडवर्ड्स की जीवनी पढ़ेंगे, तो आप इस बात से थोड़ा हैरान हो सकते हैं।

और यह ऐसी बात नहीं है जिसे जीवनीकार छिपाने की कोशिश करते हैं। उनके पास दास थे। इस तरह से वह अपनी संस्कृति का हिस्सा थे।

यह अमेरिकी लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा था। इसलिए, उनके पास दास थे। एक विद्वान और पादरी के रूप में उनका प्रचार-प्रसार का काम दिलचस्प था।

अब, मैं सिर्फ़ उनके उपदेश देने के तरीके का ज़िक्र करना चाहता हूँ। जीवनीकार यह स्पष्ट करने की कोशिश करते हैं कि वे दासों के साथ बहुत ही सावधानी से पेश आते थे, वास्तव में कर्मचारियों की तरह और कुछ दासों के साथ जिस तरह से व्यवहार किया जाता था, वैसा नहीं। लेकिन उनके पास दास थे।

इसलिए, उसने गुलाम खरीदे। उसके पास गुलाम थे। इसलिए कुछ लोगों के लिए यह थोड़ा समस्याग्रस्त हो गया।

लेकिन हमें उसे उसकी संस्कृति में रखना होगा। और वह अभी भी एक ऐसी संस्कृति थी जहाँ वे गुलामी के मुद्दे से जूझ रहे थे। हाँ।

हाँ. हाँ. सही.

आज हमारे बारे में। वाह। खैर, आज हमारे पास बहुत सारे मुद्दे हैं।

मुझे लगता है, आप जानते हैं, ठीक है, एक मुद्दा। मैं पूरे लिंग कामुकता मुद्दे पर नहीं जाऊंगा। लेकिन हम इस पर चर्चा कर सकते हैं और इस पर एक दिलचस्प चर्चा कर सकते हैं।

एक बात यह हो सकती है कि महिलाओं को मंत्रालय में शामिल किया जाए क्योंकि चर्च महिलाओं को मंत्रालय में शामिल करने के मुद्दे से जूझ रहा है। और कुछ चर्च इस मुद्दे से गुजर चुके हैं और मानते हैं कि यह बाइबिल में है। अन्य चर्च कहते हैं, नहीं, यह बाइबिल में नहीं है।

आपको मंत्रालय में महिलाओं को नहीं रखना चाहिए। इसलिए, थोड़ा संघर्ष चल रहा है। मैं इसका उपयोग इसलिए करता हूँ क्योंकि यह थोड़ा ज़्यादा है - यह अन्य मुद्दों की तुलना में थोड़ी कम गरमागरम बहस पैदा करता है।

लेकिन मंत्रालय में महिलाओं की भूमिका एक ऐसा मुद्दा हो सकता है, जहां वे 200 साल बाद पीछे मुड़कर देखेंगे और कहेंगे, ठीक है, वे इससे जूझ रहे थे, आप जानते हैं। लेकिन अब महिलाएं भी हैं - 200 साल पहले नहीं। अब, यहां तक कि रोमन कैथोलिक पादरी और अन्य महिलाएं भी हैं।

तो, क्या यह दिलचस्प नहीं होगा? तो, मुझे लगता है कि ऐसा कुछ एक उदाहरण हो सकता है। हाँ, अच्छा सवाल है। वैसे, जोनाथन एडवर्ड्स की सबसे अच्छी जीवनी, जिसे मैं जानता हूँ कि आप इस गर्मी में पढ़ना चाहेंगे, आपके पाठ्यक्रम में सूचीबद्ध है।

यह जॉर्ज मार्सडेन द्वारा लिखी गई है। और यह सबसे अच्छी और सबसे हालिया जीवनी है। यह लगभग तीन साल पुरानी है।

तो, मुझे पता है कि आप इसे अपनी गर्मियों की सूची में जोड़ना चाहेंगे। मुझे पता है कि मैंने यहाँ जो भी किताबें लिखी हैं, आप उन्हें अपनी गर्मियों की सूची में जोड़ना चाहेंगे। तो इस गर्मी में ऐसा करना आपके लिए खुशी की बात होगी।

ठीक है, कुछ और? मैं सिर्फ प्रचार का ज़िक्र करना चाहता हूँ, और फिर मैं आपको विराम देना चाहता हूँ। लेकिन जोनाथन एडवर्ड्स का प्रचार मंत्रालय। सेमिनरी से प्रचार करने की परिभाषा क्या है? मैंने सेमिनरी में क्या सीखा?

उपदेश देना ईश्वर का सत्य है जो व्यक्तित्व के माध्यम से आता है। उपदेश देना ईश्वर का सत्य है जो व्यक्तित्व के माध्यम से आता है। और जोनाथन एडवर्ड्स एक महान उपदेशक थे।

लेकिन जोनाथन एडवर्ड्स के बारे में कहा जाता है कि जब वे उपदेश देते थे, तो उनकी नज़र चर्च के पीछे लगी घंटी की रस्सी पर रहती थी। तो, वे बस उसी तरह उपदेश दे रहे थे, एक वकील की तरह। उनके पास कहने के लिए एक मुद्दा था, दार्शनिक, धार्मिक, बाइबिल से जुड़ा हुआ।

और इसलिए ऐसा नहीं लगता था कि वह सभी मण्डली के लोगों पर नज़र रखता था। और ऐसा लगता था कि वह बहुत ज़्यादा दृष्टांतों का इस्तेमाल नहीं करता था। ऐसा लगता था कि वह बाइबल के पाठ से, पद दर पद, लिया गया था।

और वह ईश्वर का सत्य था जो व्यक्तित्व के माध्यम से आ रहा था। लेकिन यह बहुत दिलचस्प है कि कुछ मायनों में, पहली महान जागृति जोनाथन एडवर्ड्स के उपदेश से शुरू हुई। और हम जो तारीख आमतौर पर देते हैं वह सिर्फ एक गोल-आंकड़ा तारीख है; यह एक सटीक तारीख नहीं है।

लेकिन हम प्रथम महान जागृति के लिए जो तिथि देते हैं वह 1734 है। 1734, जोनाथन एडवर्ड्स के महान उपदेश के कारण। अब, जब हम प्रथम महान जागृति के बारे में बात करते हैं तो हम जो देखने जा रहे हैं वह उसका बिल्कुल विपरीत है।

यह बिल्कुल विपरीत है। और वह जॉर्ज व्हाइटफील्ड नाम का एक व्यक्ति है। तो, आपको इससे ज़्यादा विपरीत किस्म का उपदेशक नहीं मिल सकता।

लेकिन अगर उपदेश देना ईश्वर का सत्य है जो व्यक्तित्व के माध्यम से आता है, तो जोनाथन एडवर्ड्स अपने व्यक्तित्व के प्रति सच्चे थे। और जॉर्ज व्हाइटफील्ड भी अपने व्यक्तित्व के प्रति सच्चे थे। और ईश्वर ने उस तरह के उपदेश का इस्तेमाल किया।

इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता कि आप किसी उपदेशक को उपदेश देते समय किसी और की तरह बनने की कोशिश करते हुए देखें। मेरा मतलब है, वे खुद नहीं हैं। मुझे नहीं पता।

वे किसी की नकल करने की कोशिश कर रहे हैं। वे ऐसा क्यों करेंगे? बिल्कुल भगवान के सत्य की तरह। अब, मेरे पास एक लंबा उपदेश आने वाला है।

तो, मैं उपदेश देने नहीं जा रहा हूँ। मैं आपको पाँच सेकंड का ब्रेक देने जा रहा हूँ। तो पाँच सेकंड का ब्रेक लें।

एडवर्ड्स, हम अभी भी जोनाथन एडवर्ड्स पर काम कर रहे हैं। हमने अभी तक उसे छोड़ा नहीं है। और मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ ताकि आपको जोनाथन एडवर्ड्स की 400 पन्नों की जीवनी न पढ़नी पड़े।

इसलिए मैं आपको बचा रहा हूँ। लेकिन मुझे जोनाथन एडवर्ड्स के बारे में बात करना पसंद है। तो, यह कोई समस्या नहीं है।

ठीक है, 1734 में प्रथम महान जागृति की शुरुआत हुई। लोगों को प्रथम महान जागृति के बारे में पता था, लेकिन यह एक तरह से, 1737 में उनकी पुस्तक द्वारा लोकप्रिय हो गई। और उन्होंने 1737 में नॉर्थमप्टन में कई सौ आत्माओं के रूपांतरण में ईश्वर के आश्चर्यजनक कार्य का एक विश्वासयोग्य वर्णन नामक पुस्तक लिखी।

तो फेथफुल नैरेटिव एक किताब थी जो पहली महान जागृति की शुरुआत के बारे में लिखी गई थी। तो, जॉन वेस्ली जैसे लोगों ने अमेरिका में पहली महान जागृति के बारे में सीखा। हम वेस्ली के बारे में बाद में बात करेंगे।

हालाँकि, उन्होंने फेथफुल नैरेटिव पढ़कर अमेरिका में पहली महान जागृति के बारे में जाना, जिसके बारे में जोनाथन एडवर्ड्स ने कहा था। तो, यह एक उल्लेखनीय जागृति है। सैकड़ों लोग धर्मांतरित हो रहे हैं।

जोनाथन एडवर्ड्स की सेवकाई के ज़रिए सैकड़ों लोग प्रभु के पास आ रहे हैं। और फिर वह काफ़ी यात्रा करने लगा क्योंकि उसे प्रचार करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। और उसके प्रचार कार्यों में, दूसरे लोग भी प्रभु के पास आ रहे हैं, और इसी तरह।

इसलिए, हम आम तौर पर 1734 डालते हैं। तो चीजें वास्तव में आगे बढ़ रही हैं। और उसका चर्च बढ़ रहा है।

अन्य चर्च बढ़ रहे हैं। और प्रथम महान जागृति शुरू हो रही है। अब, प्रथम महान जागृति में अन्य लोग भी शामिल होने जा रहे हैं।

लेकिन हम यहाँ सिर्फ़ जोनाथन एडवर्ड्स पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। वे मूल रूप से - सबसे पहले, वे चर्च के भीतर के लोग हैं जिन्हें वास्तव में यह एहसास नहीं था कि ईसाई धर्म क्या है। वे चर्च में शामिल होने की तरह हैं।

लेकिन अब वे अच्छे लोग हैं। लेकिन उन्हें यह एहसास नहीं है कि ईसाई धर्म आपसे क्या चाहता है। और वे ऐसे लोग भी हैं जो चर्च और ईसाई धर्म पर हमलावर रहे हैं और इसी तरह के अन्य हमले करते रहे हैं।

तो, यहाँ बहुत सारे लोगों का धर्मांतरण हो रहा है। तो 1734, प्रथम महान जागृति, जोनाथन एडवर्ड्स। चीजें शुरू हो गईं।

यहाँ कुछ और भी है। हमें अभी जोनाथन के बारे में बात खत्म करनी है। ठीक है।

हम उनकी कहानी खत्म करना चाहते हैं। हमारे पास पहले महान जागरण की कहानी है। ऐसे और भी लोग हैं जिनके बारे में हम बात करने जा रहे हैं।

क्या आपको हाफवे कोवेनेंट याद है? हाफवे कोवेनेंट 1657 से 1662 तक विकसित किया गया था। हाफवे कोवेनेंट के बारे में हमने जो बातें बताईं, उनमें से एक यह थी कि बपतिस्मा लेने पर व्यक्ति को चर्च की सदस्यता का अधिकार मिलता है। इसलिए यदि आपने बपतिस्मा लिया है, तो आप चर्च के सदस्य हैं, और आपको यीशु में विश्वास करने की गवाही देने की आवश्यकता नहीं है।

यह चर्च का सदस्य बनने का एक तरीका था। जोनाथन एडवर्ड्स के लिए यह पर्याप्त सख्त नहीं था। उनका मानना था, और इसलिए, यह बहुत दिलचस्प है। वैसे, इस पर वह अपने दादा से असहमत थे।

अब, वह और उसके दादा केवल दो साल के लिए सह-मंत्री थे। उनके दादा का मानना था कि प्रभु के भोज में बपतिस्मा गैर-विश्वासियों के लिए भी हो सकता है क्योंकि शायद बपतिस्मा के कार्य के माध्यम से, या शायद प्रभु के भोज में आने के माध्यम से, शायद वे विश्वासी बन जाएँ। शायद यह उनके लिए एक धर्मांतरण अध्यादेश होगा।

खैर, जोनाथन एडवर्ड्स के लिए यह पर्याप्त सख्त नहीं था। जोनाथन एडवर्ड्स का मानना था कि केवल उन्हीं लोगों को बपतिस्मा दिया जाना चाहिए जो ईसाई धर्म की गवाही बहुत स्पष्ट तरीके से दे सकते हैं। और केवल वही लोग प्रभु का भोज ग्रहण करें जो आस्तिक हों।

आपको गैर-विश्वासियों के लिए भोज की मेज नहीं खोलनी चाहिए। यह केवल उन लोगों के लिए है जो विश्वास करते हैं। इसलिए, उसे हाफवे कॉवनेंट से वास्तविक समस्याएँ थीं।

अब याद रखें कि हाफवे कॉवनेंट न्यू इंग्लैंड में मण्डलीवाद पर हावी होने लगा है और नॉर्थम्टन में चर्च पर भी हावी होने लगा है। तो, यहाँ जोनाथन एडवर्ड्स के जीवन का एक दुखद हिस्सा है। 1750 में, उन्हें चर्च से निकाल दिया गया था।

बहुत दुःख की बात है। वह अपने दादा की मदद करने के लिए वहाँ गया था। उसने अपने दादा का पदभार संभाला।

उन्होंने उस चर्च से प्रथम महान जागृति का नेतृत्व किया। लेकिन यह एक सामूहिक चर्च है, इसलिए मण्डली ही तय करती है कि पादरी कौन होगा। और 1750 में, हाफवे कॉवनेंट के खिलाफ उनके रुख के कारण उन्हें बाहर निकाल दिया गया।

तो, अब सवाल यह है कि जोनाथन एडवर्ड्स को बर्खास्त करने के बाद उसका क्या होगा? और 1750 में, जब उसे बर्खास्त किया जाता है, तो क्या यह उसके जीवन का सबसे बुरा समय होगा, या क्या भगवान इसका इस्तेमाल अच्छे कामों के लिए करेंगे? खैर, 1750 में क्या होता है, वह स्टॉकब्रिज, मैसाचुसेट्स चला जाता है। हाँ? तो, उसके इस विश्वास के लिए कि उसका इस्तेमाल सिर्फ शिशु बपतिस्मा देने वाले के तौर पर नहीं किया जाएगा? नहीं। मूल रूप से, इसमें शिशु बपतिस्मा शामिल हो सकता है, अगर परिवार इस तथ्य की गवाही देने के लिए तैयार है कि उन्हें विश्वास में एक बच्चे के रूप में पाला गया था क्योंकि वे कांग्रेसनलिस्ट हैं, जिसका मतलब है कि वे एंग्लिकन थे।

एक समय में, प्यूरिटन एंग्लिकन थे, और वे शिशुओं को बपतिस्मा देते थे। हालाँकि, माता-पिता की ओर से यह पुष्टि होनी चाहिए कि हम इस बच्चे का पालन-पोषण ईसाई धर्म में करने जा रहे हैं। हाफवे कॉवनेंट में कहा गया है कि उन बच्चों को बपतिस्मा दिया जा सकता है जिनके माता-पिता ईसाई नहीं हैं।

तो, इसमें वह भी शामिल था। फिर, इसमें वे लोग भी शामिल थे जो चर्च में आए। इसमें वे वयस्क भी शामिल थे जो चर्च में आए और कहा, मैं चर्च में शामिल होना चाहता हूँ।

तो, क्या आप मसीह में आस्था रखते हैं? वैसे, ज़रूरी नहीं है, लेकिन मैं एक अच्छा इंसान हूँ। ठीक है, हम आपको बपतिस्मा देंगे, और वह चर्च की सदस्यता होगी। तो, जहाँ तक उसका सवाल है, यह सब कुछ कमज़ोर हो गया।

और यही हाफवे कोवेनेंट का मुद्दा था। यही हाफवे कोवेनेंट पर बहस थी। और बपतिस्मा और प्रभु भोज चर्च की सदस्यता के बारे में उनका दृष्टिकोण बहुत सख्त था।

इसलिए, उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया। 1750. स्टॉकब्रिज जाता है।

क्या स्टॉकब्रिज के आस-पास से कोई आया है? स्टॉकब्रिज जाता है। स्टॉकब्रिज में क्या है? अच्छा, मेरा मतलब है, खूबसूरत जगह। मुझे यकीन है कि मैं स्टॉकब्रिज कभी नहीं गया हूँ।

लेकिन स्टॉकब्रिज में क्या है? स्टॉकब्रिज जंगल में था। यह जंगल में जा रहा है। यह विश्वासियों के एक छोटे से समुदाय को लेने और उन्हें पादरी बनाने के लिए जा रहा है।

लेकिन स्टॉकब्रिज में ऐसे मूल अमेरिकी या भारतीय भी होंगे, जिन्हें मैं सेवा दे सकता हूँ। लेकिन मैं और कहाँ जा सकता हूँ? यह जोनाथन एडवर्ड्स के जीवन का सबसे बुरा समय था। यह वह समय था जब उन्होंने अपने सभी करीबी और प्रिय लोगों को छोड़ दिया, अपने परिवार को साथ लिया और जंगल में मिशनरी बनने के लिए निकल पड़े।

ठीक है, तो सवाल यह है कि उसके बाद क्या होता है? जोनाथन एडवर्ड्स अपने जीवन के सबसे बुरे दौर से गुज़र रहे हैं। उसके बाद क्या होता है कि वह स्टॉकब्रिज पहुँच जाते हैं, और उनके पास लिखने के लिए बहुत समय होता है। और इसलिए, वह लिखना शुरू कर देते हैं।

अब, वह निश्चित रूप से लिख रहे थे, धर्मोपदेश, व्यक्तिगत कथाएँ, इत्यादि प्रकाशित कर रहे थे। वह लिख रहे थे, लेकिन इससे उन्हें वास्तव में सोचने का समय मिला क्योंकि उनके पास समय था इसलिए वह वास्तव में अपने धर्मशास्त्र के बारे में सोच सकते थे और वास्तव में सोच सकते थे और इसे लिख सकते थे। इसलिए, जो उनके जीवन का सबसे निचला बिंदु था, वह वास्तव में उनके जीवन के सबसे उत्पादक बिंदुओं में से एक बन गया।

तो, क्या हम कभी अपने जीवन में यह सच पाते हैं, कि कभी-कभी जो आपके जीवन का सबसे कठिन समय और आपके जीवन का सबसे त्यागा हुआ समय लगता है, क्या हम पाते हैं कि कभी-कभी वह ऐसा समय होता है जब भगवान वास्तव में चमत्कारी तरीके से काम करते हैं, और हम उससे बेहतर इंसान बनकर निकलते हैं? खैर, जोनाथन एडवर्ड्स एक बेहतर इंसान के रूप में इससे बाहर निकले। यह उनकी रचनाओं में से एक है, ए केयरफुल एंड स्ट्रिक्ट इंक्वायरी इनटू द मॉडर्न प्रिवेलिंग नोशन ऑफ़ फ्रीडम ऑफ़ द विल, जिसे अधिक एजेंसी, गुण, सलाह, पुरस्कार, दंड, प्रशंसा और दोष के लिए केंद्रीय माना जाता है। अब, यह पुस्तक का शीर्षक है।

यह एक ऐसी किताब है जिसमें उन्होंने पूर्वनियति का बचाव किया और इच्छा की स्वतंत्रता की आर्मीनियार्ड धारणा का खंडन किया। इसलिए, वह यहाँ एक तरह की नैतिक लड़ाई और इच्छा

की स्वतंत्रता में विश्वास रखने वाले लोगों के साथ एक धार्मिक लड़ाई में उतरने के लिए तैयार हैं। इसलिए यह वास्तव में उनके जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण समय साबित हुआ।

ठीक है, तो चलिए मैं उनकी कहानी खत्म करता हूँ। मैं बस उनके मंत्रालय में जीवन के परिणाम देखना चाहता हूँ। वे वहाँ हैं। वे स्टॉकब्रिज में हैं और संभवतः स्टॉकब्रिज में ही रहेंगे, लेकिन उन्हें कहीं जाने का निमंत्रण मिला है क्योंकि वे एक बहुत ही शानदार विचारक हैं।

उन्हें 1758 में प्रिंसटन यूनिवर्सिटी का अध्यक्ष बनने के लिए आमंत्रित किया गया था। अभी हमने प्रिंसटन के बारे में बात नहीं की है। इस पर ध्यान दें।

हमने हार्वर्ड के बारे में बात की, है न? और हमने ब्राउन के बारे में बात की, लेकिन हमने प्रिंसटन के बारे में बात नहीं की। इसलिए, हम इस व्याख्यान में प्रिंसटन के बारे में बात करने जा रहे हैं, लेकिन बाद में। लेकिन वैसे भी, उन्हें प्रिंसटन विश्वविद्यालय जाने और प्रिंसटन का अध्यक्ष बनने का निमंत्रण मिला है।

1758 में, वह प्रिंसटन चले गए। तो, वह प्रिंसटन चले गए। हम प्रिंसटन की स्थापना के बारे में बात करेंगे।

वह प्रिंसटन चले गए, और, आप जानते हैं, वहाँ भी, उनके जीवन में त्रासदी आती है, लेकिन वह इसे ईश्वर की महिमा के रूप में देखते हैं। उन्हें चेचक का टीका लगवाना पड़ा ताकि वे चेचक के प्रति संवेदनशील न हों, और 1758 में टीकाकरण से उनकी मृत्यु हो गई। वह प्रिंसटन में केवल तीन महीने के लिए राष्ट्रपति रहे।

इसलिए, उनका अंत कुछ हद तक असामयिक था, लेकिन वे निश्चित रूप से इसे ईश्वर की कृपा मानते थे। यह उनके अपने जीवन में ईश्वर का समय था। जब आप इसे मानवीय दृष्टिकोण से देखते हैं तो यह समय थोड़ा दुखद लगता है, लेकिन मुझे संदेह है कि जोनाथन एडवर्ड्स इसे उस दृष्टिकोण से देखेंगे।

ठीक है, तो वह जोनाथन एडवर्ड्स हैं, जो वास्तव में एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति हैं। अब मैं उनके साथ जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि हम उन्हें छोड़ने से पहले, यहाँ नंबर ए, मैं उनके जीवन के परिणामों को देखना चाहता हूँ, जोनाथन एडवर्ड्स के जीवन और मंत्रालय के परिणामस्वरूप क्या हुआ। लेकिन ऐसा करने से पहले, क्या जोनाथन एडवर्ड्स की बहुत समृद्ध, बहुत ही रोचक जीवनी के बारे में कोई प्रश्न हैं? उल्लेखनीय व्यक्ति।

ठीक है, किस तरह का? कब क्या होता है? खैर, पहला महान जागरण जोनाथन एडवर्ड्स के साथ तीन अन्य नेताओं के पीछे जाता है जिनके बारे में हम बात करेंगे। तो, यह सही है, इसके परिणाम 60 के दशक तक और 70 के दशक की शुरुआत में क्रांतिकारी युद्ध के समय तक चले। और फिर वहाँ है, जैसा कि हम पाठ्यक्रम में देखेंगे, लेकिन फिर धर्म का बहुत तेजी से हास हुआ।

क्रांति के आने और आगे बढ़ने के साथ ही लोग राजनीति की ओर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। तो, फिर एक तेज तरह की शुरुआत हुई, और फिर 1800 से शुरू होकर, हमारे पास दूसरी महान जागृति आई। इसलिए, मुझे यह देखना अच्छा लगता है, मुझे यह सब एक तरह से पेंडुलम की तरह होते हुए देखना अच्छा लगता है।

यह पेंडुलम 1734 में शुरू हुआ और 50 और 60 के दशक तक चला। फिर, पेंडुलम तर्कवाद, ईश्वरवाद और इसी तरह की अन्य चीजों की ओर बढ़ेगा। और फिर आपको दूसरी महान जागृति मिलेगी।

यहाँ कुछ और भी है? ठीक है, परिणाम क्या हैं? जोनाथन एडवर्ड्स के जीवन और मंत्रालय के परिणामस्वरूप क्या हुआ? ठीक है, पहला हम पहले ही बता चुके हैं, और वह है कैल्विनवाद का पुनरुत्थान। कैल्विनवाद का पुनरुत्थान। यह समाप्त हो गया, इसे प्यूरिटन द्वारा यहाँ लाया गया था।

यह दूसरी, तीसरी और चौथी पीढ़ी में समाप्त हो गया। प्यूरिटन वह नहीं थे जो उन्हें होना चाहिए था। इसलिए कैल्विनवाद समाप्त हो गया, यह उपनिवेशों के सांस्कृतिक जीवन और धार्मिक जीवन में फिर से उभर आया। नंबर दो, मन के जीवन और हृदय के जीवन का एक अद्भुत संतुलन।

जोनाथन एडवर्ड्स इसका एक बेहतरीन उदाहरण हैं। मन के जीवन और हृदय के जीवन का सुंदर संतुलन। यही संपूर्ण व्यक्तित्व है।

मैं अक्सर कहता हूँ कि आज हम जिन चीज़ों से लड़ रहे हैं, उनमें से एक यह है कि अगर जोनाथन एडवर्ड्स हमारे आस-पास होते, तो वे हमारी मदद कर सकते थे। वे अपने जीवन और सेवा के ज़रिए हमारी मदद करते हैं। आज हम जिन चीज़ों से लड़ रहे हैं, उनमें से एक यह है कि लोग कह रहे हैं कि आपको चुनाव करना होगा।

या तो आप एक बुद्धिहीन ईसाई बन जाएँगे और अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं करेंगे, या फिर आप एक तर्कसंगत व्यक्ति बन जाएँगे और ईसाई धर्म से जुड़ी इन सभी बातों पर वास्तव में विश्वास नहीं करेंगे। आपको चुनाव करना होगा। वैसे, आपको चुनाव करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि दिमाग में जीवन और अनुभव का जीवन एक साथ खूबसूरती से चलते हैं।

और इसलिए अगर लोग कभी आप पर यह विकल्प थोपते हैं, तो उनसे कहिए, मुझे खेद है, यह ऐसा विकल्प है जिसे मुझे नहीं चुनना है। मैंने एक संपूर्ण व्यक्ति बनने का विकल्प चुना है। मैं अकेलापन महसूस करता हूँ।

तो बस यही है, मन के जीवन और हृदय के जीवन का संतुलन। यह प्रशंसा कि सभी सत्य ईश्वर का सत्य है। और याद रखें, हमने कहा कि वह प्राकृतिक दुनिया, विज्ञान, धर्मशास्त्र, दर्शन, नैतिकता और अर्थशास्त्र से कितना प्यार करता था।

जहाँ तक उनका सवाल है, यह सारा सत्य ईश्वर का सत्य है, तो क्यों न इसका अध्ययन किया जाए? इसलिए वे इसका एक आदर्श उदाहरण हैं। दूसरी बात है शास्त्रों से उपदेश देने की शक्ति। वे इसका एक बेहतरीन उदाहरण हैं, जैसे कि प्रथम महान जागृति में अन्य लोग शास्त्रों से उपदेश देते हैं।

जोनाथन एडवर्ड्स के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। परमेश्वर के वचन को लोगों के दिलों और दिमागों तक अपनी बात पहुँचाने दें। इसलिए, वह इसका एक अच्छा उदाहरण हैं।

उनके पास काफी उत्तराधिकार भी था। उपराष्ट्रपति जोनाथन एडवर्ड्स की वंशावली से आए थे। बहुत सारे पादरी जोनाथन एडवर्ड्स की वंशावली से आए थे।

उच्च शिक्षा के तेरह अध्यक्ष उनके वंश से आए थे, और 65 प्रोफेसर उनके वंश से आए थे, जो बहुत दिलचस्प है। इसलिए, उनका न केवल धार्मिक प्रभाव था, बल्कि उनका सांस्कृतिक प्रभाव भी था। फिर, जोनाथन एडवर्ड्स के परिणामों के बारे में एक अंतिम बात यह है कि उनका अनुसरण किया गया।

उनके बहुत सारे अनुयायी थे। उनके साथ पढ़ने वाले बहुत से लोग थे। उनके साथ बहुत से लोग थे, जिनमें उनका अपना बेटा भी शामिल था।

इन अनुयायियों को एक नाम मिला। उन्हें एडवर्ड्सियन, एडवर्ड्सियन कहा जाता है। एडवर्ड्सियन लोग थे, जोनाथन एडवर्ड्स की दूसरी पीढ़ी के लोग थे।

और एडवर्ड्स के लोगों ने कुछ हद तक उनके धार्मिक एजेंडे को आगे बढ़ाया, लेकिन पूरी तरह से नहीं। तो, चार लोग हैं, और उनका प्रभाव पड़ा, विश्वविद्यालय जीवन में, सांस्कृतिक जीवन में, चर्च जीवन में जबरदस्त प्रभाव पड़ा। और चार एडवर्ड्स के लोग हैं।

अब, मैंने उनके नाम का उल्लेख किया है। जोसेफ बेलामी उनमें से एक हैं। जोसेफ बेलामी को जोनाथन एडवर्ड्स ने प्रशिक्षित किया था, इसलिए वह जोनाथन एडवर्ड्स के छात्र थे।

सैमुअल हॉपकिंस दूसरे नंबर पर हैं, इसलिए सैमुअल हॉपकिंस भी जोनाथन एडवर्ड्स को व्यक्तिगत रूप से जानते थे। यह उनके बेटे, जोनाथन एडवर्ड्स जूनियर और फिर नाथनियल एमन्स हैं। अब, मैं एडवर्ड्स के बारे में बस इतना ही कहना चाहता हूँ।

एडवर्ड्स के बारे में बात करने के लिए हमें पूरा कोर्स करना पड़ेगा। वे बहुत ही दिलचस्प लोग हैं, लेकिन हम एडवर्ड्स के बारे में बात करते हुए अगले 15 सप्ताह तक अटक सकते हैं। इसलिए मैं एडवर्ड्स के बारे में बस इतना ही कहूँगा।

एक समूह के रूप में, प्रत्येक ने बहुत कुछ और सब कुछ लिखा, लेकिन मूल रूप से, एक समूह के रूप में, उन्होंने धर्मशास्त्र के संदर्भ में इच्छा की अधिक स्वतंत्रता पर जोर दिया, और उन्होंने जोनाथन एडवर्ड्स के पूर्वनिर्धारण पर जोर नहीं दिया। इसलिए, उनके पास इस तरह की इच्छा

की स्वतंत्रता के मुद्दे थे और पूर्वनिर्धारण पर जोर नहीं दिया। इसलिए, वे कुछ मायनों में एडवर्ड्सवादी थे।

उन्होंने कुछ मायनों में उनके धर्मशास्त्र को आगे बढ़ाया, लेकिन अन्य तरीकों से, वे वास्तव में उस व्यक्ति से अलग थे जिसकी वे इतनी प्रशंसा करते थे, और इसलिए उन्होंने इस स्वतंत्र इच्छा पर जोर दिया। उनमें से दो ने जिन चीजों पर जोर दिया उनमें से एक मूल पाप था। उनमें से दो ने कहा कि मूल पाप जैसी कोई चीज नहीं है।

मूल पाप केवल आदम का पाप है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी नहीं चला, लेकिन सभी मनुष्य पापी हैं, लेकिन वे सभी पापी इसलिए नहीं हैं क्योंकि उन्हें आदम से मूल पाप विरासत में मिला है, बल्कि इसलिए क्योंकि उन्होंने इच्छा की स्वतंत्रता पर काम किया और पाप करना चुना। खैर, देखिए, यह कुछ ऐसा है जिससे जोनाथन एडवर्ड्स कभी सहमत नहीं होते।

तो, एडवर्ड्सियन महत्वपूर्ण हैं। जब आप एस्कुलम पुरार्ड या हार्डमैन में उनके नाम देखें, तो उन पर ध्यान दें, और देखें कि वे क्या सिखा रहे हैं, लेकिन आप समझ जाएंगे कि एडवर्ड्सियन के साथ हम इतना ही समय बिता सकते हैं। अन्यथा, हम जून तक यहाँ रहेंगे। तो, ठीक है, आपका दिन शुभ हो।

हम आपको शुक्रवार को मिलेंगे।

यह डॉ. रोजर ग्रीन हैं जो अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह जोनाथन एडवर्ड्स और प्रथम महान जागृति पर सत्र 5 है।